भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग
लोक सभा
तारांकित प्रश्न संख्या 331
11 अगस्त, 2026 को उत्तरार्थ

विषय: प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना
***331. श्रीमती कमलजीत सहरावतः**
श्रीमती संजना जाटवः
क्या **कृषि और किसान कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः
(क) विगत तीन वर्षों के दौरान देश में प्राकृतिक कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा की गई पहलों का राज्य-वार तथा विशेषकर झारखंड, कर्नाटक तथा भरतपुर लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र के अंतर्गत अलवर, डीग और भरतपुर जिलों तथा शहडोल और नबरंगपुर लोक सभा निर्वाचन क्षेत्रों का जिला-वार ब्यौरा क्या है;
(ख) झारखंड, ओडिशा, कर्नाटक, महाराष्ट्र के पालघर जिले और नबरंगपुर लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र सहित राज्य-वार कुल कितने क्षेत्र को प्राकृतिक खेती के अंतर्गत लाया गया है और इन पद्धतियों को अपनाने वाले किसानों की संख्या महिला/पुरुष-वार कितनी है;
(ग) क्या सरकार ने फसल उत्पादकता, आदान लागत और किसानों की आय के संबंध में प्राकृतिक खेती के प्रभाव का कोई आकलन किया है;
(घ) यदि हां, तो नबरंगपुर लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र सहित तत्संबंधी राज्य-वार और जिला-वार ब्यौरा क्या है; और
(ङ) कच्छ जिले में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को प्रदान किए जा रहे प्रशिक्षण, प्रोत्साहन और विपणन सहायता सहित भावी कार्य योजना का ब्यौरा क्या है?

उत्तर
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री (श्री शिवराज सिंह चौहान)
(क) से (ङ): एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

'प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना' विषय के संबंध में दिनांक 11 अगस्त, 2026 को उत्तरार्थ लोक सभा तारांकित प्रश्न संख्या 331 के भाग (क) से (ङ) का विवरण

(क) और (ख): केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए 25 नवम्बर, 2024 को राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन को अनुमोदन दिया। अब तक, मिशन के अंतर्गत 24,102 क्लस्टर बनाए जा चुके हैं जो 12.60 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करते हैं, 26.76 लाख किसान पंजीकृत हुए हैं, 8,100 बायो-इनपुट रिसोर्स सेंटर स्थापित किए गए हैं तथा 40,182 कृषि सखी/कम्यूनिटी रिसोर्स पर्सन तैनात किए गए हैं। झारखंड, राजस्थान, ओडिशा, कर्नाटक और महाराष्ट्र राज्यों सहित राज्य/संघ राज्य क्षेत्र-वार विवरण **अनुबंध-I** पर दिया गया है। जिला-वार आंकड़े तथा महिला/पुरुष-वार आंकड़े केंद्रीय स्तर पर नहीं रखे जाते हैं।

भरतपुर, शहडोल एवं नबरंगपुर लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र तथा पालघर जिले में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन का अब तक का विवरण निम्नानुसार है:

	लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र	**जिला**	**कवर क्षेत्र (हेक्टेयर)**	**लाभान्वित किसान**
1.	भरतपुर	अलवर	2200	5500
		डीग	2200	5500
		भरतपुर	2150	5375
2.	शहडोल	शहडोल	1250	3125
		अनूपपुर	2500	6250
		उमरिया	1250	3125
		कटनी	1250	3125
3.	नबरंगपुर	नबरंगपुर	1150	2875
4.	--	पालघर	1300	3250

(ग) और (घ): भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने 08 प्रमुख फसल प्रणालियों का मूल्यांकन करने हेतु वर्ष 2020-21 में ऑल इंडिया नेटवर्क प्रोग्राम ऑन नेचुरल फ़ार्मिंग (पूर्व में एआईएनपी-ऑर्गेनिक फ़ार्मिंग) के अंतर्गत 16 राज्यों को कवर करते हुए 20 को-ऑपरेटिंग सेंटर के साथ एक अध्ययन आरंभ किया है। अध्ययन में प्राकृतिक खेती के अंतर्गत पद्धतियों के पैकेज का विकास भी शामिल है। इस अध्ययन में 11 राज्य कृषि विश्वविद्यालय, 08 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थान/केंद्र तथा 01 मानद विश्वविद्यालय सम्मिलित हैं। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि यदि सही तकनीकों तथा संतुलित तरीके से प्राकृतिक खेती अपनाई जाए तो उत्पादन में वृद्धि होती है। अनेक किसानों के अनुभवों से भी यह ज्ञात हुआ है कि इससे मिट्टी के स्वास्थ्य, फसल की गुणवत्ता, स्वाद तथा दीर्घकालिक उत्पादन में सुधार होता है। इसके अतिरिक्त, रासायनिक लागत में कमी से किसानों के शुद्ध लाभ में वृद्धि होती है। प्राकृतिक खेती में मल्चिंग से मृदा नमी बनाए रखने, खरपतवार नियंत्रण तथा मृदा में जैविक पदार्थ बढ़ाने में सहायता मिलती है। इससे मृदा सूक्ष्मजीवों की सक्रियता बढ़ती है तथा मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है। बहु-फसलीकरण से खेत में जैव विविधता बढ़ती है, कीट व रोगों की घटनाओं में कमी आती है तथा पोषक तत्वों के उपयोग में सुधार होता है। अध्ययन में शामिल राज्य-वार जिलों का विवरण **अनुबंध-II** पर दिया गया है।

अध्ययन के निष्कर्ष निम्नानुसार हैं;

(i) नेटवर्क रिसर्च के अंतर्गत, विभिन्न राज्यों हेतु फसल प्रणाली-आधारित प्राकृतिक खेती पैकेज विकसित किए गए हैं, जैसे मूंगफली + तिल – सौंफ + पत्तागोभी (राजस्थान एवं गुजरात), सोयाबीन + मक्का – गेहूं + सरसों (छत्तीसगढ़ एवं मध्य प्रदेश) तथा कसावा (केरल)।

(ii) बजौरा (हिमाचल प्रदेश), अल्मोड़ा (उत्तराखंड) तथा गंगटोक (सिक्किम) में, पूर्णतः प्राकृतिक खेती के अंतर्गत सोयाबीन + मक्का – सब्जी वाली मटर + धनिया (हरी पत्ती) फसल प्रणाली में (5 वर्षों में) औसत प्रणाली उत्पादकता (सोयाबीन तुल्य) 6475 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष दर्ज की गई, जो जैविक खेती/एकीकृत फसल प्रबंधन की तुलना में लगभग 05 प्रतिशत अधिक थी।

(iii) भोपाल एवं जबलपुर (मध्य प्रदेश) तथा रायपुर (छत्तीसगढ़) में, सोयाबीन + मक्का – गेहूं + सरसों फसल प्रणाली में (5 वर्षों में) औसत प्रणाली उत्पादकता (सोयाबीन तुल्य) 3346 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष दर्ज की गई, जो एकीकृत फसल प्रबंधन तथा जैविक खेती के समतुल्य पाई गई।

(iv) एस.के. नगर (गुजरात), अजमेर तथा उदयपुर (राजस्थान) में, पूर्ण प्राकृतिक खेती के अंतर्गत लोबिया + मक्का/मूंगफली + तिल – सौंफ + फूलगोभी/पत्तागोभी फसल प्रणाली में (5 वर्षों में) औसत प्रणाली उत्पादकता (लोबिया समतुल्य) 9209 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष दर्ज की गई। यह एकीकृत फसल प्रबंधन के समतुल्य पाई गई।

(v) प्राकृतिक खेती प्रबंधन से सॉइल हेल्थ संकेतकों में स्पष्ट सुधार परिलक्षित हुआ है। प्राकृतिक खेती वाले खेतों में 2-3 वर्षों की अवधि में मिट्टी के ऑर्गेनिक कार्बन के स्तर में वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए हिमालयी क्षेत्रों में किए गए परीक्षणों में मिट्टी के ऑर्गेनिक कार्बन लगभग 0.90% से बढ़कर 1.15% हो गए। प्राकृतिक खेती वाली मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की संख्या तथा विविधता का इंडेक्स रासायनिक उर्वरकों से की गई खेती वाले मिट्टी की तुलना में अधिक पाया गया। लाभकारी बैक्टीरिया, फंगी तथा एक्टिनोमाइसिट्स की प्रचुरता तथा संतुलित वितरण देखा गया, जो समय के साथ एक स्वस्थ सॉइल इकोसिस्टम के विकास को दर्शाता है। प्राकृतिक खेती के अंतर्गत मिट्टी में जैविक पदार्थ तथा सूक्ष्मजीवों की वृद्धि से पोषक चक्रण तथा मिट्टी की संरचना में सुधार होता है, जिससे दीर्घकालिक सॉइल फर्टिलिटी तथा फसल उत्पादन स्थिरता की सुदृढ़ नींव तैयार होती है।

इसके अतिरिक्त, नीति आयोग की मूल्यांकन रिपोर्ट दर्शाती है कि प्राकृतिक खेती अपनाने वाले लगभग 91.2% किसानों ने फसल उत्पादकता में वृद्धि तथा मिट्टी के स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार का अनुभव किया है। 90.1% किसानों ने बताया कि प्राकृतिक खेती अपनाने से इनपुट लागत (उत्पादन लागत) में कमी आई है।

(ङ): राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के अंतर्गत, कम्यूनिटी रिसोर्स पर्सन तथा किसानों को प्राकृतिक खेती की पद्धतियों हेतु क्लस्टर स्तरीय प्रशिक्षण दिया जाता है। ऐसे सीआरपी तथा किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र, राज्य कृषि विश्वविद्यालय एवं स्थानीय प्राकृतिक खेती संस्थान में वैज्ञानिकों तथा किसान मास्टर प्रशिक्षकों द्वारा प्राकृतिक खेती की पद्धतियों एवं लाभ के बारे में प्रशिक्षित किया जाता है। इस योजना में प्रति एकड़, प्रति वर्ष ₹4000/- की दर से 2 वर्षों तक (प्रति किसान 01 एकड़ तक) परिणाम-आधारित प्रोत्साहन का प्रावधान भी शामिल है। गुजरात राज्य द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, कच्छ जिले में 46 क्लस्टर बनाए गए हैं जो 5750 एकड़ क्षेत्र को कवर करते हैं तथा 5750 किसानों को लाभान्वित करते हैं।

अनुबंध-I

प्राकृतिक खेती के अंतर्गत लाए गए क्षेत्र तथा इनसे संबंधित पद्धतियों को अपनाने वाले किसानों की संख्या का राज्य/संघ राज्य क्षेत्र-वार अद्यतन विवरण

क्र.सं.	राज्य/संघ राज्य क्षेत्र	किसान पंजीकरण	कवर क्षेत्र (हेक्टेयर में)
1	अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह	500	200.00
2	आंध्र प्रदेश	655659	434156.56
3	अरुणाचल प्रदेश	22982	8805.32
4	असम	8234	4884.10
5	बिहार	62565	26855.31
6	छत्तीसगढ़	73215	31505.42
7	दिल्ली	375	150.00
8	गोवा	1623	630.89
9	गुजरात	151108	61919.23
10	हरियाणा	13600	10703.21
11	हिमाचल प्रदेश	76628	27852.32
12	जम्मू और कश्मीर	26591	10905.05
13	झारखंड	14312	5686.88
14	कर्नाटक	154401	58136.80
15	केरल	19638	7560.11
16	लद्दाख	621	175.62
17	मध्य प्रदेश	197661	91199.66
18	महाराष्ट्र	274875	109950.00
19	मणिपुर	16077	6364.63
20	मेघालय	19517	3223.40
21	मिज़ोरम	37878	15800.14
22	नागालैंड	35373	14423.12
23	ओडिशा	75371	30148.40
24	पुदुचेरी	772	256.25
25	पंजाब	6418	2122.48
26	राजस्थान	266596	112865.58
27	तमिलनाडु	8072	3509.91
28	तेलंगाना	77205	39699.13
29	त्रिपुरा	33643	11188.99
30	उत्तर प्रदेश	290500	116200.00
31	उत्तराखंड	29782	10066.55
32	पश्चिम बंगाल	25000	3600.00
	कुल	**26,76,792**	**12,60,745.03**

अनुबंध-II

प्राकृतिक खेती के अंतर्गत प्रमुख फसल प्रणालियों की फसल उत्पादकता तथा सॉइल ऑर्गेनिक कार्बन की स्थिति।

क्र.सं.	आईसीएआर संस्थान/विश्वविद्यालय	प्राकृतिक खेती के अंतर्गत फसल प्रणाली मूल्यांकन
1.	पर्वतीय कृषि अनुसंधान एवं विस्तार केंद्र, सीएसएचपीकेवीवी, बजौरा (हिमाचल प्रदेश)	सोयाबीन + मक्का (2:1) – सब्जी वाली मटर + हरा धनिया (2:1)
2.	आईसीएआर-आरसी-पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्र, सिक्किम केंद्र, गंगटोक (सिक्किम)	
3.	आईसीएआर-विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा (उत्तराखंड)	
4.	आईसीएआर-भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, भोपाल (मध्य प्रदेश)	सोयाबीन + मक्का (4:2) – गेहूं + सरसों (8:2)
5.	जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश)	
6.	इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)	
7.	आईसीएआर-राष्ट्रीय बीज मसाला अनुसंधान केंद्र, अजमेर (राजस्थान)	लोबिया + मक्का (4:2) / मूंगफली + तिल (6:2) – सौंफ + फूलगोभी/पत्तागोभी (2:1)
8.	महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)	
9.	सरदारकृषिनगर दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, एस.के. नगर (गुजरात)	
10.	आईसीएआर-केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान, तिरुवनंतपुरम (केरल)	कसावा + सब्जी लोबिया (1:2) – मूंग
11.	डॉ. बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ क्षेत्रीय केंद्र, कर्जत (महाराष्ट्र)	धान + *ढैंचा* (3:1)– मक्का+लोबिया (चारा) (2:1)
12.	बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची (झारखंड)	
13.	रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, नरेंद्रपुर (पश्चिम बंगाल)	
14.	आईसीएआर-भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कालीकट (केरल)	हल्दी + लोबिया (1:1) – मूंग
15.	आईसीएआर-अनुसंधान परिसर-पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्र, उमियम (मेघालय)	
16.	आईसीएआर-भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम (उत्तर प्रदेश)	मक्का + लोबिया (चारा) (1:1) – गेहूं + चना (2:2, बेड प्लांटिंग)
17.	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना (पंजाब)	
18.	जी.बी. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर (उत्तराखंड)	
19.	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबटूर (तमिलनाडु)	कपास + मूंग (1:1) – ज्वार+चना (1:1)
20.	कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	

******